

## कोविड-19 दौरान प्रवासियों के बीच मनोसामाजिक मुद्दे

प्रवासी अस्थायी रूप से रहने वाले अपने नए वातावरण से कम परिचित होते हैं। वे ऐसी स्थितियों में विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक आघात के लिए प्रवण होते हैं, जो स्थानीय समुदाय द्वारा उनकी उपेक्षा के भय और उनके मूल निवास स्थानों में प्रतीक्षा कर रहे उनके परिवारों की कुशलता और सुरक्षा के बारे में चिंताओं से उत्पन्न होते हैं। प्रवासी बेहतर अवसरों और कमाई की तलाश में कभी-कभी अपने परिवारों को पीछे छोड़ कर, अपने मूल निवास स्थानों को छोड़ने के लिए मजबूर होते हैं। कई मामलों में, मूल स्थानों में रहने वाले परिवार आंशिक या पूरी तरह से कमाने वाले प्रवासी-सदस्यों द्वारा भेजे गए धन पर निर्भर करते हैं।

कोविड-19 जैसे संचारी रोगों के प्रकोप के दौरान और रोग के प्रसार को रोकने के लिए सामाजिक दूरी बनाने के मानदंडों के हिस्से के रूप में नियमित गतिविधियों पर लगाए गए प्रतिबंधों के दौरान बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक अपने मूल निवास स्थानों को वापस जाने के लिए प्रवृत्त होते हैं। प्रचलित कोविड महामारी के दौरान भी, कई प्रवासियों ने अपने गंतव्य-स्थल तक पहुंचने के लिए सभी संभावित साधनों का उपयोग किया। हालांकि, उनमें से कई प्रवासी राज्य, जिले और राष्ट्रीय सीमा क्षेत्रों सहित सीमाओं पर अटक गए। ये समाज के सबसे अधिक हाशिये पर रहने वाले लोग हैं जो अपने जीवन-यापन के लिए दैनिक मजदूरी पर निर्भर हैं, और ऐसे संकट के समय में समाज की सहानुभूति और समझ की आवश्यकता होती है।

ऐसे प्रवासी श्रमिकों के सामने आने वाली चिंताओं का संबंध भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य देखभाल, संक्रमित हो जाने या संक्रमण फैलने के भय, मजदूरी के नुकसान, परिवार की चिंता, चिंता और भय से होता है। कभी-कभी, उन्हें स्थानीय समुदाय के उत्पीड़न और नकारात्मक प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसी समस्याओं से निपटने के लिए मजबूत सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता है।

तत्काल प्रतिक्रिया के रूप में, किए जाने के उपायों में सामुदायिक आश्रयों और सामुदायिक रसोई को सुनिश्चित करना, अन्य राहत सामग्री उपलब्ध कराना, सामाजिक दूरी की आवश्यकता पर जोर देना, संक्रमण के संदिग्ध मामलों की पहचान करना और ऐसे मामलों के प्रबंधन के लिए

प्रोटोकॉल का पालन करना, टेलीफोन, वीडियो कॉल आदि के माध्यम से परिवार के सदस्यों के साथ संपर्क करने में सक्षम बनाने और उनकी शारीरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तंत्र स्थापित करना शामिल होना चाहिए।

अपने मूल निवास-स्थान की ओर जाते समय अस्थायी आश्रय-स्थलों, जोकि क्वारंटीन केंद्र हो सकते हैं, में कुछ दिन बिताने की समस्या का सामना करने वाले प्रवासी श्रमिक विभिन्न सरोकारों के कारण चिंतित व भयभीत होते हैं और उन्हें मनो-सामाजिक सहयोग की आवश्यकता होती है। इस तरह के समर्थन के भाग के रूप में, निम्नलिखित उपायों को अपनाया जा सकता है:

1. प्रत्येक प्रवासी कार्यकर्ता के साथ गरिमा, सम्मान, सहानुभूति एवं दया से परिपूर्ण बर्ताव करें।
2. उनके सरोकारों को धैर्यपूर्वक सुनें और उनकी समस्याओं को समझें।
3. प्रत्येक व्यक्ति/परिवार की विशिष्ट व अलग-अलग जरूरतों को पहचानें। इनका कोई सामान्यीकरण न हो।
4. उन्हें यह समझाने में मदद करें कि यह अनिश्चितता की एक असामान्य स्थिति है और उन्हें आश्वस्त करें कि यह स्थिति क्षणिक है और लंबे समय तक नहीं चलने वाली है। शीघ्र ही, सामान्य जीवन फिर से शुरू हो जाएगा।
5. मदद के संभावित स्रोतों के बारे में पूरी जानकारी के साथ तैयार रहें। उन्हें केंद्र सरकार, राज्य सरकार / गैर सरकारी संगठनों / स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों द्वारा प्रदान की जा रही सहायता के बारे में सूचित करें।
6. उनके मौजूदा स्थान पर ही उनके ठहरने के महत्व पर जोर दें और उन्हें यह भी बताएं कि किस प्रकार भारी संख्या में आवागमन करने से वायरस को रोकने के सभी प्रयासों पर बहुत अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
7. उन्हें समुदाय में उनके महत्व का अहसास कराएं और समाज के प्रति उनके योगदान की सराहना करें।
8. उन्हें याद दिलाएं कि उन्होंने अपने स्वयं के प्रयासों से अपनी जगह बनाई है, अपने नियोक्ता का विश्वास हासिल किया है, अपने परिवारों को धन भेजा है और इसलिए, वे सभी सम्मान के लायक हैं।

9. उन्हें इस बात के लिए आश्वस्त करें कि भले ही उनका नियोक्ता उन्हें विफल करे, स्थानीय प्रशासन और धर्मार्थ संस्थान हर संभव उनकी मदद करेंगे।
10. हताशा का कारण, कई लोग ऐसे तरीके से प्रतिक्रिया दे सकते हैं जो अपमानजनक लग सकता है। उनके मुद्दों को समझने की कोशिश करें और धैर्य रखें।
11. अगर किसी को प्रभावित होने का डर है, तो उन्हें बताएं कि यह स्थिति ठीक होने योग्य है, और इससे अधिकांश लोग ठीक हो रहे हैं।
12. उन्हें याद दिलाएं कि अगर वे खुद को अपने परिवारों से दूर रखते हैं, तो यह उनके परिवारों के लिए सुरक्षित रखता होगा।
13. किसी भी प्रकार की दया दिखाने के बजाय, स्थिति पर नियंत्रण पाने की भावना में उनका समर्थन प्राप्त करें।